ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

सेवाराम यात्री के उपन्यासों में भाषा शैली का विलक्षण रूप

शोधार्थी- मधु रानी

संस्थान-लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ,

मेल आईडी- madhuraniitpro@gmail.com

प्रस्तावना

साहित्य जगत में सेवाराम यात्री जी ने किरतीमान स्थापित किया है। उनके द्वारा उधृत कृतियाँ लगातार प्रगतिपथ पर अग्रसर होती जा रही हैं। इनके द्वारा रचित रचनाओं की भाषा शैली में विलक्षण स्वरूप की अनुभूति होती है। जिसका अनुमोदन पाठक शहरसह करते हैं। किसी भी साहितिक रचना का स्वरूप उसकी भाषा शैली पर निर्भर करती है। भाषा शैली साहित्य का ऐसा तत्व है जिसका सम्बन्ध समपूर्ण कथा के साथ होता है। उसका उचित उपयोग भाषा के स्वरूप पर निर्भर करता है। तथा उसी पर साहित्य की सफलता निर्भर करती है। मनुष्य के विचारों का आदान-प्रदान जिस माध्यम से होता है वे भाषा ही है। भाषा के विषय में 'भोलानाथ तिवारी' के मतानुसार, "भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं"।[1] भाषा भावों अथवा विचारों को स्पष्ट करने का साधन है इसमें शिल्प का अभिव्यक्ति पक्ष भाषा से सम्बन्धित होता है।

स्वतंत्रओत्तर हिंदी उपन्यास में अपनी एक स्वतन्त्र पहचान बनाने वाले उपन्यासकारों में श्रेष्ठ रचनाकार से.रा.यात्री जी का नाम आदर से लिया जाता है। यात्री जी के उपन्यास मध्यवर्गीय आम आदमी के जीवन को चित्रित करते हैं इसलिए उनके उपन्यासों में भाव पक्ष के साथ कला पक्ष का सहज एवं सुन्दर समनव्य हुआ है। यात्री जी भाषा प्रयोग में यथार्थ के साथ सामाजिक समस्याएं और चरित्रों को दर्शाने में पूर्ण सक्षम हैं। यात्री जी जिस दृष्य का वर्णन करते हैं भाषा उसका सजीव चित्र प्रस्तुत कर देती है। यही कारण है कि उपन्ययासों में प्रभाव, सरस्ता, आकरषण, आवेग, मधूरता और पात्रों के अनुकुल और प्रसंग के अनुसार समनव्य की एक अनुठे ढंग से दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि के समान ही यात्री जी का व्यापक दृष्टिकोण अभिहित होता है। अतः सहज अकल्पनीय सामन्य सी बात-चित के माध्यम से भी यात्री जी गहरी

[1] भोलाननाथ तीबारी 'भाषा विज्ञान', पृष्ठ संख्या-1।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

सम्वेदना को भी व्यक्त करते हैं। वे भाषा की नविनता के प्रति आकर्षित होते हैं। अप्रत्यक्ष रूप में उन्होंने अपने उपन्यासों के पात्र द्वारा भाषा की नियत को प्रतिपादित किया है। 'छलावा' उपन्यास का पात्र कहता है, "भाषा सोच के मुकाबले कमजोर माध्यम नहीं है आदमी के सोच विचार का कोई भी यानी महीन से महीन पक्ष भी ऐसा नहीं है जिसे भाषा में व्यक्त न किया जा सके, मगर सबसे बड़ी बात यह है कि न तो हम भाषा के विकास के बारे में स्वयं सचेत हैं न उसके नए से नए रूप की ओर आकर्षित होते हैं"।[2] ये तो स्पष्ट हो जाता है कि यात्री जी भाषा के महत्व को तुरन्त प्रतिपादित करते हैं। यात्री जी के अधिकतर उपन्यासों में समान्य आदमी का जीवन संघर्ष और मानसिकता का चित्रण हुआ है। उनकी उपन्यासों में कथावस्तु की प्रभावमयता सहज स्वाभाविक दृष्टिकोण होने के वजह से यह है की कहीं भी बोझिल एवं कठिन शब्दों का प्रयोग न होने के बराबर हुआ है। कहीं-कहीं तो भाषा के कारण वातावरण इतना साकार हो उठा है की अपेक्षित भाव भी अपने आप में पाठकों के समुख मुखर हो जाती है। यात्री जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं यही कारण है कि उपन्यासों में भाषा सौन्दर्य, अलंकार, कहावतें, मुहावरें, लोकोकतिया, वक्रोक्ति, व्यंग्य, प्रतिक, बिम्ब, लाक्षिनकता व स्थानीय बोली आदि का उपयोग उपन्यास में निरंतरता आसक्ति और विशेषता को बनाए रखता है। यही कारण है कि रचना की भाषा सौन्दर्य बनी रहती है। इससे शिल्पगहत मौलिकता उत्पन्न हो जाती है और यही मौलिकता रचना को रोचक, लोकप्रीय और कालजई बनाती है।

पात्र अनुकूल भाषा

रचनाकार पात्रा अनुकुल भाषा के माध्यम से अपनी रचना में देश काल और वातावरण की श्रीष्टि कर देता है। इसके संबंध में 'डॉ. धर्म ध्वज तिरपाठी' लिखते हैं-"कथाकार अपनी विजन के अनुरूप एक कल्पना जगत का निर्माण करता है। उसे मूर्त विष्वनीय स्वाभाविक व जीवंत बनाने के लिए भाषा को रचनात्मक गुणों से सम्पन्न करता है"।[3] स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यासकार अपने वीजन के अनुरूप कथा और पात्रों का निर्माण करता है। उपन्यासकार से.रा.यात्री के उपन्यासों में अनेक पात्र जिस परिवेश से जुड़े हैं उनकी पहचान भाषा करा देती हैं। पात्रानुकुल भाषा के युगीन परिवेश के साथ-साथ पात्र की सामाजिकता या मानसिकता भी सामने आ जाती है। यात्री जी के कुछ उपन्यासो के पात्र महानगरीय जीवन से सम्बन्धित है। महानगरीय सभ्यता में अंग्रेजी का प्रयोग बड़ी सहजता से होता है। शिक्षित व नौकरी पेशा लोग बात –बात में अंग्रेजी का प्रयोग करते नज़र आते हैं। जो कि निम्नलिखित है। 'छलावा' उपन्यास का भारगव पढ़ा-लिखा, किन्तु बड़ा चालाक है। वह अपनी बुद्धि

[2] से.रा.यात्री 'छलावा', पृष्ठ संख्या-97।

[3] डॉ. धर्म ध्वज तिर्पाठी 'प्रेमचंद्र कथा साहित्य समिक्षा एवं मूल्यांकन', पृष्ठ संख्या-172।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

चातुर्य से धोखा-धड़ी करता है। बड़े-बड़े सिधांतों की दुहाई देता है। इसलिए बात-बात पर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करता है। जैसे-"आई डौन्ट ऐग्री बीद यू सर, वाट आर यु सेइंग सर इट इज वेरी हौरिवल एंड जिंजर्स।

'अंजान राहों का सफर' इस उपन्यास में हिंदी के उपन्यास का पात्र प्रशान्त की भाषा में साहितिक रोचकता देखी जा सकती है। जैसे-हालांकि आसमान पूरी तरह साफ और निलीमा युक्त था। लेकिन कहीं-कहीं बादलों के टुकड़ें रुई के धुने हुए गालों के भाँति तैर रहे थे। कुल मिलाकर वहाँ का वातावरण बहुत शांत और हृदयग्राहि था"।[4]

यात्री जी के कुछ उपन्यासों में कहीं-कहीं पंजाबी पात्रों की सृजना हुई है। उन्हें स्वाभाविकता प्रदान करने हेतु आम आदमी की भाषा का प्रयोग कर भाषा में पात्रअनुकूलता का गुण ला दिया है। 'घटना सुत्र' उपन्यास के दिल्ली शहर में रहने वाले डॉक्टर दीवान की भाषा पर पंजाबी का प्रभाव अवश्य दिखाई देता है। जैसे-"तुसी तो मेरे नाल आओ बादशाहों तनु की तकलीफ है बाओजी, बोलो जी तुसी अपणा बोलो" "उनादे दिल में आइन्दा है बोल तो लेते हैं जी, हांजी वह डॉक्टर दीवान पर डबड़ वाला बंदा है"।[5]

यात्री जी के उपन्यासों में कुछ पात्र बंगाली भाषा को बोलते हुए नजर आते हैं। 'बिखरे तिनके' उपन्यास में निशांत भट्टाचार बंगला में नई कविता के सुत्रधार माने जाते हैं। उसकी भाषा पर

भी बंगला का प्रभाव दिखाया गया है। "कोई नई बात नई बोला सारे सौनसार में जो कुछ हो तो हायरच्चा, लोग मुर्दा को रस्सी को आइस करने की सोचता है सौंसार विचित्र है जनाव अबि आपको बहुत कुछ पोता नहीं है"।[6]

यात्री जी ने ब्रज बोली का प्रयोगकर पात्रों में सहज स्वाभाविकता निर्माण करते हैं। 'सुबह की तलाश' उपन्यास में राकेश की माँ के सारे सम्वाद ठेठ ब्रज भाषा में हैं। अपने बेटे के मित्र सतीश को अपना बेटा ही समझती है। गाँव की सहृदयता उसमें भरपूर है। जैसे-"लोट आयो लल्ला चल तु भी अब बैठ उनन के साथ राकेश तो अबला ही आयो नाए हतें"। अतः हम कह सकते हैं कि यात्री जी ने अपने उपन्यासों में पात्र के अनुकुल भाषा का प्रयोग कर पात्रों में जान भरदी है। उन्होंने चरित्रों के परिवेश को ध्यान में रखा है। साथ ही उनकी मानसिकता को भी ध्यान में रखते हुए भाषा का प्रयोग किया है। निसंदेह पात्रा अनुकुल भाषा के कारण यात्री जी के उपन्यास कथा वस्तु देश काल वातावरण और उद्देश्य की पुर्ती में सफल रहे हैं।

लाक्षनिकता का प्रयोग

जहाँ मुख्यात्म में बाधा उपस्थित होने पर किसी रूढ़ी प्रयोजन के कारण लक्ष्यार्थ किया जाता है वहाँ लाक्षिनिकता दृष्टिगोचर होती है। 'हिंदी भाषा एवं साहित्य कोष' में लिखा है, "लक्षणा शक्ति के द्वारा लक्ष्य की

---

[4] से.रा.यात्री 'अनजान राहों का सफर', पृष्ठ संख्या-15।

[5] से.रा.यात्री 'घटनासुत्र', पृष्ठ संख्या-136, 137।

[6] से.रा.यात्री 'आखिरीपड़ाव', पृष्ठ संख्या-12।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

जानकारी प्राप्त होती है। और लक्ष्यार्थ को प्रकट करने वाले शब्द लक्षक या लाक्षनिक शब्द कहलाते हैं"।[7] *लाक्षनिक शब्द अपने भीतर विशिष्ट गुण संजोए रहते हैं इसलिए वह साहित्य में अर्थ चमत्कृत उत्पन्न कर देते हैं। वैसे साहित्य की भाषा व्यंजनात्मक होती है, किन्तु रचनाकार यथा अवकाश लाक्षनिकता का प्रयोग कर कथावस्तु की वाक्य सनरचना को रोचक एवं सुन्दर बना देता है। से.रा.यात्री के उपन्यासों में आए लाक्षिनिकता के कुछ उदाहरण दृष्टव्य है। 'दूसरी बार' उपन्यास में नैना के वैविध्य के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा गया है। "नैना के सामने अलिंघ्य रेगिस्तान ही रेगिस्तान फैला पड़ा था" "काश तुम्हारा भी कोई समुद्र होता" "नैना के आँखों में साबन-भादों की झड़ी लगी हुई थी"।*[8] *इस प्रकार से.रा.यात्री ने अपने उपन्यासों के भाषा की सुन्दरता बढ़ाने के लिए तथा अर्थ को गहराई प्रदान करने हेतु लाक्षनिकता का प्रयोग किया है। लाक्षनिकता के कारण उनके भाषा में रसमयता के साथ अर्थ चमत्कृत रूप बन गई है।*

प्रतिक योजना

प्रतिक का शाब्दिक अर्थ अव्यव या चिन्ह है। साहित्य में प्रतिक हमारी भाव सत्ता को प्रकट अथवा गोपन करने का माध्यम है। प्रतीक किसी सुक्ष्म भाव विचार या अगोचर तत्व का साकार करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। 'डॉ. पारुकांत देसाई' के मतानुसार, "जब दृष्य के कारण पूरी वस्तु का प्रतिपादन करती है उसे प्रतिक कहा जाता है"।[9] प्रतिक अमुर्त अदृष्य वस्तु को प्रति विधान द्वारा मुर्त या दृष्य बनाता है। प्रतिक के सहायता से कल्पना अधिसुक्ष्म संक्षिप्त एवं सुन्दर बन जाती है। साहित्यकार अपनी अनुभूति को विषद अभिव्यक्ति योजनाओं नवीन प्रयोगों सौन्दर्य की अभिव्यक्ति मार्मिक और प्रभावोत्पादकता बनाए रखने के लिए प्रतिकों का प्रयोग करता है। यात्री जी के उपन्यासों में प्रतिक की योजना का प्रयोग प्रश्नात्मक स्तर पर हुआ है। उन्होंने समर्थक प्रतिकों का प्रयोग कर विषय-वस्तु उनकी संवेदना को रोचक बना दिया है। 'मायामृग' उपन्यास में चित्रित दामपत्य जीवन की जड़ता को दूर करने के लिए प्रकृति की प्रतिकात्मकता को आधार बनाकर बात कही गई है। "अपना सरवोत्म दे जाने के बाद क्या पेड़ खाली नहीं हो जाते कहाँ रह जाते हैं उन पर पत्ते, फूल और फल। डालें भी पत्रहीन होकर नग्न रह जाते हैं। तब क्या वृक्षों को श्रीहिन कहकर हम अलग हट जाते हैं"।[10] यह दामपत्य जीवन की परिस्थिति दिक्षित है। इस प्रकार से.रा.यात्री ने अपने उपन्यासों में प्रतिक योजना का प्रयोगकर विषय वस्तु को संवेदनशील बना दिया है।

बिम्ब का प्रयोग

---

[7] सम्पादक गणपतिचंद्र गुप्त 'हिंदी भाषा एवं विश्व शब्द कोष', खंड एक पृष्ठ संख्या-644।

[8] से.रा.यात्री 'दूसरी बार', पृष्ठ संख्या-64, 175, 176।

[9] डॉ. पारुकांत देसाई 'हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्री उपन्यास' पृष्ठ संख्या-447।

[10] से.रा.यात्री 'मायामृग' पृष्ठ संख्या-148।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

साहित्य में विविध अनुभुतियों को साकार करने हेतु बिम्ब योजना का प्रयोग विशेष रूप से होता है, किन्तु प्रभावशाली लेखक ही अन्य विधा में बिम्ब का प्रयोग कर अपनी अनुभूति को साकार बना देते हैं। 'डॉ. *नामवरसिंह' के अनुसार, "बिम्ब वस्तुतः आधुनिक युग की कलात्मक अभिव्यक्ति का अनिवार्य माध्यम हो गया है"।*[11] *बिम्ब भाषाओं को सम्वेदनात्मक बनाता है। लेखक द्वारा प्रयुक्त बिम्ब के माध्यम से पाठक के मन में एक उचित भाव जागरित होता है। उपन्यासकार से.रा.यात्री ने अपने उपन्यासों में विभिन्न परिस्थितियों को बिम्भ विधानों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। उपन्यास की केन्द्रीय सम्वेदना को साकार बनाने हेतु वस्तु, पात्र, परिवेश के लिए बिम्ब विधान का प्रयोग किया गया है। 'घर न घाट' उपन्यास में योगेन्द्रमित्तल के रूप वर्णन में बिम्ब प्रतिबिम्ब का प्रयोग कर लेखक ने चित्र सा खड़ा कर दिया है। यथा-"जो आदमी सामने था वह महज एक मुचिदार सा फटेदार जांघिया पहने नंग-धड़ंग था और उसकी कमान की तरह आगे को निकली हुई छाती पर काले-सफेद बालों का गुच्छा किसी निर्जर टीले पर खड़ी सुखी हुई घाँस का आभास देते थे"।*[12] *आरोपित बिम्ब उस व्यक्ति की शारीरिकता के साथ मानसिकता को चित्रित करने में पूरी तरह समर्थ है। अतः स्पष्ट है कि यात्री जी के उपन्यासों में बिम्ब, कथा, वस्तु, चरित्र एवं परिवेश के साथ जुड़े हुए हैं। उनके बिम्ब विधान में रागात्मकता के साथ भावात्मकता संलग्न है। इसी लिए भाषा में सहजता के साथ स्वाभाविकता का गुण है जो पाठकों पर अमिट छाप छोड़ती है।*

भाषा में अलंकारिकता

अलंकार काव्य का महत्वपूर्ण अंग है। यह काव्य को न केवल रोचक बनाता है बल्कि उसके सौंदर्य में चार चांद लगाता है। 'हिंदी साहित्य कोश' के अनुसार, "सामान्यतह वकतव्य की विभिन्न चमत्कार पूर्ण विधान को अलंकार की संज्ञा दी गई है"।[13] *साहित्य में उक्ति वैचित्र का प्रयोग विविधता के स्तर पर होता है। इसी उक्ति वैचित्र की अनेकता के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार की अलंकारों की स्थिति सम्भव है। उपन्यासकार अलंकृत वाक्य के रचना से साहित्य में अलाहदत्ता उत्पन्न कर देता है। से.रा.यात्री ने अपने उपन्यासों में अलंकृत भाषा का प्रयोगकर अपनी अभिव्यक्ति को साकार बनाया है। जैसे उपमा अलंकार-"उसके पतले-पतले होट गहरे गुलाब की पतियों जैसे लगे थे"।*[14]

अनुप्रास अलंकार-"छिल-छिलकर छाले फोड़े"।[15]

---

[11] डॉ. नामवर सिंह 'कहानी नयी कहानी' पृष्ठ संख्या-33।

[12] से.रा.यात्री 'घर न घा'' पृष्ठ संख्या-6।

[13] सम्पादक धिरेंद्र वर्मा तथा अन्य 'हिंदी साहित्य कोष'', भाग एक पृष्ठ संख्या-53।

[14] से.रा.यात्री 'कलंदर', पृष्ठ संख्या-9।

[15] से.रा.यात्री 'बैरंगखत', पृष्ठ संख्या-11।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

वक्रोकति अलंकार-"आदमी ही आदमी का इनतिजार नहीं करते कभी-कभी दिवारे तक आदमी से ज्यादा रहमदिल सावित होती हैं"।[16]

रुपक अलंकार-"जब वह रात के वक्त पहाड़ की चोटी के नीचे घाटी में सोए पड़े देहरादुन की जगमगाती बत्तियाँ देखेंगे तो लगेगा दीवाली की रात है या आसमान निचि घाटी में उतर आया है"।[17]

मानवीकरण अलंकार-"मसूरी तो पहाडों की रानी है"।[18]

संदेह अलंकार-"उसकी आँखों में या तो हल्कि सी काजल की रेखा थी या फिर हो सकता है घनी पलकों की सघनता में छिपी श्याम लता ही काजल का भ्रम पैदा करती हो"।[19] *इस प्रकार से.रा.यात्री जी के उपन्यासों में अलंकार युक्त भाषा का सुन्दर प्रयोग हुआ है।*

मुहाबरों का प्रयोग

मुहाबरों का जनम परम्परा रूढ़ी अथवा लोक में घटित किसी घटना को आधार मानकर होता है। समान्यतह व्यक्ति अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए मुहाबरें का प्रयोग करते हैं। साधारण शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जब कोई वाक्य विन्यास अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशिष्ट अर्थ को प्रकट करे मुहाबरा कहलाता है। इसके प्रयोग से भाषा में चुटीलापन आता है। भाषा की सम्प्रेशनीयता एवं प्रभावात्मकता ईत्यादि मुहाबरे के गुणवत्ता पर निर्भर करता है। ये समान्य अर्थों का बोध नहीं कराता बल्कि किसी लाक्षनिक अर्थों का प्रतीति कराता है। इसी बात को' डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद' ने लिखा है, "ऐसा वाक्यांश जो समान्य अर्थ को बोध न करके किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराएं वह मुहाबरा कहलाता है"।[20] उक्त संदर्भ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यात्री जी ने उपन्यासों की भाषा को प्रभामय, गतिशीलता एवं सम्प्रेशनीयता बनाने के लिए मुहाबरें का प्रयोग किया है। *उदाहरण के रूप में कुछ मुहाबरें निम्नलिखित है।*

"आँखों में धूल झोंकना, अकल पर पत्थर पड़ जाना, आँखें ठंडी हो जाना, हाँथ-पैर मारना, चार चाँद लगा देना"।[21]

इस प्रकार यात्री जी के उपन्यासों में प्रयोग किए गए मुहाबरों में उनकी परम्परा, रूढ़ि तथा लोकभावना सम्मिलित है। यही वजह है उपन्यास पढ़ते समय मुहाबरे का अर्थ पाठक को आसानी से समझ में आ जाता है।

कहावतों और लोकोकतियों का प्रयोग

---

16 से.रा.यात्री 'अपरिचित शेश', पृष्ठ संख्या-139।

17 से.रा.यात्री 'कलंदर', पृष्ठ संख्या-137 से 138।

18 से.रा.यात्री 'यातनाशीविर', पृष्ठ संख्या-127।

19 वही, पृष्ठ संख्या-9।

20 डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद 'आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना', पृष्ठ संख्या-298।

21 से.रा.यात्री 'दूसरी बार', पृष्ठ संख्या-19, 34, 42, 48, 78, 88, 100।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

लोकोकती का अभिप्राय लोकोकती अर्थात लोक की उक्ति या कथाएं। लोक में किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ घटित घटनाओं से जब लोग शिक्षा ग्रहण करने लगते हैं तो धिरे-धिरे उस कथन को लोक अपना लेता है तब वह लोकोकती बन जाता है। साहित्यकार भाषा में चमत्कार लालित्य लाने के लिए इसका प्रयोग सफलतापूर्वक करता है। 'हिंदी विश्व कोष' में कहा गया है, "अपने कथन की पूष्टि में यह चेतावनी देने के उपदेश के किसी बात को आड़ में कहने से अभिप्राय अथवा ऐसे उपालम्भ देने या व्यंग्य आदि करने के लिए अपने स्वतन्त्र अर्थ रखने वाली जिस लोक में प्रचलित तथा सामान्यतह सारगर्भित, संकिर्ण, संक्षिप्त एवं चटपटी उक्ति का प्रयोग लोग करते हैं उसे लोकोकति अथवा कथानक नाम दिया जाता है"।[22] *इस तरह भाषा में कहावतों अथवा लोकोकतियों के प्रभाव से भाव की गम्भिरता गहरी हो जाती है। लोकोकतियों का प्रयोग यात्री जी के उपन्यासों में बहुत देखने को मिलता है। जिससे भाषा सजीव बन जाती है और भाषा का सौंदर्य बढ़ जाता है। उपन्यासकार से.रा.यात्री ने अपने उपन्यासों में हिंदी और अंग्रेजी कहावतों का प्रयोगकर पात्रों की स्थिति घटना एवं प्रसंग को प्रभावपूर्ण बना दिया है। जो कि निम्नलिखित है। "उल्टा चोर कुतवाल को डाटें, घर की मुर्गी दाल बराबर, दूर के ढोल सुहावने, जिसकी लाठी उसकी भैंस, भय बिनु होत न प्रिति"।* [23]

अंग्रेजी कहावतें

जश्टी डिलेट जश्टी डीनाय, स्काइब ध आयरन, वैन इट इज फौर, आऊट आफ साइड आऊट आफ माइंड आदि। अतः जिस बात को लम्बी-चौड़ी भूमिका बनाकर भी नहीं समझा सकते उसे कहावतें अथवा लोकोकति का प्रयोगकर यात्री जी ने भली-भाँती समझाने का प्रयास किया है।

निष्कर्श

निश्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि उपन्यासकार **से.रा.यात्री जी मानवीय मूल्यों व संवेदनाओं के पक्षधर हैं।** यही कारण है कि उनके उपन्यासों में अनुभव, सम्वेदना, चेतना व अभिव्यंजना का पुट विद्यमान है। इसी के कारण उनकी भाषा शैली मे सहज स्वाभाविकता मिलती है। इनकी भाषा प्रयोग में कहीं भी बोझिलपन का बोध नहीं होता है। बसर्ते देश, काल, पात्र व प्रसंगों के अनुकूल ही भाषा की प्रयुक्ति उपन्यास साहित्य की ही मूल सम्वेदना को समप्रेशनीय बना देती है। शब्दचयन वाक्य सनरचना कहावतें मुहाबरे तथा समपर्क शिर्षक के कारण यात्री जी के उपन्यासों का भाषा पक्ष अत्यन्त प्रभाव्कारी व शसक्त बन चुका है।

[22] सम्पादक धिरेंद्र वर्मा तथा अन्य 'हिंदी विश्व कोष', खंड दो पृष्ठ संख्या-408।

[23] से.रा.यात्री 'दूसरीबार', पृष्ठ संख्या-6, 46, 65, 90, 157।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

यात्री जी अपने उपन्यासों में शहरी परिवेश के मध्यवर्गीय आम आदमी का संघर्ष, विवशता, अभाव व बेरोज़गारी की यथार्थ तस्वीर उकेरने का भरसक प्रयास करते हैं। इसी प्रयास में उनकी भाषा अधिक प्रभावशील प्रतित होती है। साथ ही हर बोली व भाषा में खूद को सिद्धस्त होने का प्रमाणिकता को भी दर्शाया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यात्री जी ने भाषा के माध्यम से अपनी चिन्तन यात्रा को नया रूप दिया है। सारांशतह यात्री जी का अभिव्यक्ति पक्ष काव्य के अनुरूप पात्रअनुकुल प्रसंगाअनुकुल तथा उद्देश्य से प्रेरित रहा है और भाषा शैली का विलक्षण प्रयोग अभिव्यंजित हुआ है। अतः भाषा शिल्प के दृष्टि से हिंदी साहित्य जगत में अभिजात्य पुरुष 'से.रा.यात्री' जी की अद्वितीय पहचान है।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

संदर्भग्रंथ

1. भोलाननाथ तीबारी 'भाषा विज्ञान', पृष्ठ संख्या-1।
2. [1] से.रा.यात्री 'छलावा', पृष्ठ संख्या-97।
3. [1] डॉ. धर्म ध्वज तिर्पाठी 'प्रेमचंद्र कथा साहित्य समिक्षा एवं मूल्यांकन', पृष्ठ संख्या-172।
4. [1] से.रा.यात्री 'अनजान राहों का सफर', पृष्ठ संख्या-15।
5. [1] से.रा.यात्री 'घटनासुत्र', पृष्ठ संख्या-136, 137।
6. [1] से.रा.यात्री 'आखिरीपड़ाव', पृष्ठ संख्या-12।
7. [1] सम्पादक गणपतिचंद्र गुप्त 'हिंदी भाषा एवं विश्व शब्द कोष', खंड एक पृष्ठ संख्या-644।[1]
8. से.रा.यात्री 'दूसरी बार', पृष्ठ संख्या-64, 175, 176।
9. [1] डॉ. पारुकांत देसाई 'हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्री उपन्यास', पृष्ठ संख्या-447।
10. [1]से.रा.यात्री 'मायामृग', पृष्ठ संख्या-148।
11. [1] डॉ. नामवर सिंह 'कहानी नयी कहानी', पृष्ठ संख्या-33।
12. [1] से.रा.यात्री 'घर न घाट', पृष्ठ संख्या-6।
13. [1] सम्पादक धिरेंद्र वर्मा तथा अन्य 'हिंदी साहित्य कोष', भाग एक पृष्ठ संख्या-53।
14. [1] से.रा.यात्री 'कलंदर', पृष्ठ संख्या-9।
15. [1] से.रा.यात्री 'बैरंगखत', पृष्ठ संख्या-11।
16. [1] से.रा.यात्री 'अपरिचित शेश', पृष्ठ संख्या-139।
17. [1] से.रा.यात्री 'कलंदर', पृष्ठ संख्या-137 से 138।
18. [1] से.रा.यात्री 'यातनाशीविर', पृष्ठ संख्या-127।
19. [1] वही, पृष्ठ संख्या-9।
20. [1] डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद 'आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना', पृष्ठ संख्या-298।
21. [1] से.रा.यात्री 'दूसरी बार', पृष्ठ संख्या-19, 34, 42, 48, 78, 88, 100।
22. सम्पादक धिरेंद्र वर्मा तथा अन्य 'हिंदी विश्व कोष', खंड दो पृष्ठ संख्या-408।
23. से.रा.यात्री 'दूसरी बार', पृष्ठ संख्या-6, 46, 65, 90, 157।